पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

समाज
विकास
शिक्षा
पर्यावरण
युवा
मूल्य
राजनीति
महिला
संस्कृति
समाधान

समाज
साहित्य
संस्कृति
विकास
नई पीढ़ी
बेहतर कल

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

रचनाकार :-
निक्की निषाद

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन, वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका – **निक्की निषाद**

असली सुधार

बदलाव

एक बार की बात है एक बहुत ही प्रसिद्ध आदमी थे वे समाज में फैली हुई गंदगी, भ्रष्टाचार पर बहुत ही बड़े-बड़े लेख और कहानी लिखा करते थे उनका कहना था कि समाज पूरी तरह से खराब हो चुका है उस पर सुधार करना जरूरी है वह दिन रात इसी बात को लेकर सोचते रहते थे कि आखिरकार समाज को कैसे सुधारा जाए ? वह हर जगह स्कूल, कॉलेज, अस्पताल जहां लोगों की जुट हो वहां पर भाषण दिया करते थे और सबको अनुशासन का पाठ पढ़ाया करते थे लेकिन ठीक इसके उल्टा उसके खुद के घर का माहौल ठीक नहीं था वे अपने परिवार के लोगों से समय नहीं दे पाता था और घर को लोगों के प्रति भी उनका व्यवहार अच्छा नहीं था एक दिन वह अपने कमरे में बैठकर कुछ लिख रहे थे कि आखिरकार समाज को कैसे सुधारा जा सकता है तभी कुछ समय बाद उसका छोटा बेटा अपने हाथ पर एक कॉपी लाता है और उसपर अपनी बनाई हुई पेंटिंग अपने पिता को दिखाता है तो उनके पिता उन पर गुस्सा करते हुए कहते हैं कि तुम्हें दिखाई नहीं देता कि मैं कुछ काम कर रहा हूं उनका बेटा वहां से रोते रोते हुए वहां से चला जाता है कुछ समय बाद उनकी पत्नी वहां आती है और कहती है कि ऐसे समाज को सुधारने से क्या फायदा जब आप अपने पत्नी और बच्चे को के प्रति आपका व्यवहार अच्छा नहीं है जब आपके खुद के परिवार के लोग आपसे नाखुश रहते हैं तो ऐसे सुधार का क्या फायदा? तभी उसे अपनी गलती का एहसास हुआ फिर उसने अपने आप में सुधारने की कोशिश की।खुद को बदला... यह कहानी हमें यह सीख देती है कि यदि आप समाज को सुधारना चाहते हो तो उसकी शुरुआत दुनिया से नहीं बल्कि खुद से और अपने घर से करनी चाहिए जब हर व्यक्ति खुद पर सुधार करेगा तो समाज अपने आप सुधर जाएगा। इससे लोगों को सीख लेनी चाहिए कि उपदेश देना तो बहुत ही आसान है पर खुद पर अमल करना उतना ही कठिन,...!

- निक्की निषाद

लेखक परिचय

नाम – निक्की निषाद

निवास – राँची झारखण्ड

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....**निक्की निषाद**.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...